

## 28 April The Hindu

### Lesson from a military encounter

- आधुनिक विश्व की जटिल समस्याओं के आलोक में विभिन्न राष्ट्र राज्यों द्वारा एक साथ कई स्तरों पर कूटनीतिक प्रक्रियाओं का संचालन 'बहुआयमी कूटनीति' कहलाता है। इसके अंतर्गत आधिकारिक और गैर आधिकारिक स्तरों पर संघर्ष के कारणों को समाप्त करने के प्रयत्न, नागरिकों और वैज्ञानिक स्तरों पर आदान प्रदान, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों का अदान प्रदान जैसे विकल्प अपनाए जाते हैं। ये प्रयत्न सरकारों, राजनैतिक संगठनों, व्यापारिक समुदायों, धार्मिक संगठनों, मीडिया या आम नागरिकों द्वारा संचालित किए जा सकते हैं। इसके महत्वपूर्ण प्रकार निम्नलिखित हैं-

#### ट्रैक-2 कूटनीति

- अंतर्राष्ट्रीय विवादों के समाधान के लिए नागरिकों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली कूटनीति को ट्रैक-2 कूटनीति कहा जाता है। वस्तुतः यह अंतर्राष्ट्रीय नीतियों का भी प्रतिनिधित्व करती है जिसमें नागरिकों की भूमिका की विशेष महत्ता होती है।

#### संदर्भ

- युद्ध के दौरान या शत्रु देश से वार्ता का विकल्प जनता द्वारा अवांछनीय माना जाता है। हालांकि युद्ध के लंबे इतिहास में पिछले संकटों से निपटने के अपने अनुभव का यह सबक है, की तनाव कम करने डी-एस्केलेशन के लिए दोनों पक्षों के बीच वार्ता होना महत्वपूर्ण है।
- इस संबंध में यह प्रश्न महत्वपूर्ण है, कि फरवरी में पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान के साथ वार्ता करनी चाहिए थी यह नहीं?

#### महत्वपूर्ण बिंदु

- इस तरह की वार्ता 'बैक चैनल' के माध्यम से मीडिया से बचकर की जा सकती है। बैक चैनल' वार्ता में औपचारिक अधिकारी या नेता की जगह अनौपचारिक व्यक्तियों जैसे सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित व्यक्तियों द्वारा की जाती है। इसका उद्देश्य विवेकपूर्ण और शांतिपूर्वक हल निकालना होता है।
- वर्तमान में भारत और पाक देशों के बीच संचार के पहले से मौजूद चैनल का शायद ही इस्तेमाल किया जाये ह द्विपक्षीय वार्ता का संकट है।
- यह हमारे लिए चिंता का विषय होना चाहिए। पाकिस्तान के बालाकोट में भारतीय वायुसेना के हमलों के बाद सैन्य गतिरोध के चलते दोनों देशों में वार्ता पर विराम लग गया।
- द्विपक्षीय संघर्ष को रोकने के लिए बैक-चैनल के माध्यम से वार्ता होनी चाहिए ताकि हम अवांछनीय परिणामों और युद्ध जैसी भयानक स्थितियों से बच सकें। युद्ध जैसी स्थितियों के चलते 'बैक चैनल से वार्ता नहीं की जाती तो इसके अभाव में दोनों परमाणु सशस्त्र देश अप्रत्याशित परिणामों के साथ अनजान - संघर्ष की ओर बढ़ सकते हैं।
- यह ध्यान में रखना चाहिए कि इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि केंद्रीय निर्णय निर्माताओं द्वारा सैन्य संकटों को नियंत्रित किया जा सके इसलिए 'बैक चैनल' महत्वपूर्ण साबित होते हैं।
- **संचार टूटना** - भारत और पाक के बीच हालिया घटनाक्रमों के बीच दोनों देशों के बीच संपर्क नहीं था जो डी-एस्केलेटरी की भूमिका निभाते। पिछले वर्षों के विपरीत वर्तमान में दोनों देशों के बीच राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार के अधिकारियों के बीच बैठक नहीं हुई और हालिया घटनाओं के बाद दोनों देशों द्वारा अपने-अपने उच्चायुक्तों को वापिस बुला लिया गया।
- संकट की जिस अवधि के दौरान आवश्यकता थी कि सरकारों द्वारा शांति व वैकल्पिक संदेशों को आदान -

प्रदान किया जाए साथ ही बैंक चैनल वार्ता हो ताकि युद्ध को टाला जा सके, लेकिन अपने-अपने उच्चायुक्तों को दोनों देशों द्वारा वापस बुलाना विपरित कदम था।

- बैंक चैनल द्वारा कारगिल के युद्ध में भी राजनीतिक रूप से नियुक्त वार्ताकारों ने दोनों देशों के बीच डी-एस्कैलेटरी पर विचार विमर्श किया।
- वर्तमान में सरकार द्वारा किसी तरह के वार्ता के प्रयास नहीं किए जा रहे हैं।
- भारतीय पायलट की रिहाई के लिए दोनों देशों के रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ), और इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस के प्रमुखों ने एक दूसरे संवाद किया और हल निकाला।

**तीसरा पक्ष-** जब दो देशों में शत्रुता होती और वार्ता तंत्र नहीं होता है, तो तीसरे पक्ष या देश द्वारा मध्यस्थता की जाती है किंतु यह किसी लाभ से प्रभावित होती है, और इस वार्ता से दोनों देशों के लाभ नहीं मिलता तथा कई पक्षों की भागीदारी से स्थिति में गलत संचार व कुप्रबंधन हो सकता है अलग-अलग एजेडों और उद्देश्यों के साथ मध्यस्थता में तीसरे पक्षों द्वारा अपने हित साधने की कोशिश की जाती है।

#### निष्कर्ष

- पाकिस्तान में उच्च स्तरीय बैंक चैनल संपर्क फिर से स्थापित किए जाने की आवश्यकता है। शीतयुद्ध के दौरान भी दोनों देशों द्वारा एक दूसरे से बैंक चैनल वार्ता जारी रखी गई थी। जिसका परिणाम युद्ध जैसी स्थितियों से बचना था।
- इस से हम सीख सकते हैं, कि प्रतिद्वंद्वी के साथ संघर्षों में भी एक दूसरे से वार्ता जारी रखी जानी चाहिए ताकि युद्ध जैसी स्थितियों को टाला जा सके।

#### मुख्य परीक्षा प्रश्न

**प्रश्न-** भारत एवं पाकिस्तान के मध्य संबंध हमेशा से उतार-चढ़ाव से युक्त रहे हैं। हाल ही में पुलवामा हमले के बाद से द्विपक्षीय संबंधों की तलखी अपने चरम सीमा पर पहुँच गये हैं। क्या भारत को पाकिस्तान के साथ अपने संबंधों को सामान्य करने हेतु वार्ता के अन्य उपायों को अपनाया चाहिए?